Sarcouncil Journal of Humanities and Cultural Studies

ISSN(Online): 2945-3658

Volume- 03| Issue- 03| 2024

Review Article **Received:** 12-02-2024 | **Accepted:** 11-03-2024 | **Published:** 29-03-2024

गुरु रविदास जी के काव्य में निरूपित जीवन मूल्य

किरण शर्मा

वरिष्ठ एसोशिएट प्रोफैसर हिन्दी- विभागाध्यक्ष डी.ए.वी.कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुनानगर।

Abstract: यह शोध-पत्र गुरु रविदास जी के काव्य में निहित जीवन मूल्यों का विश्लेषण करता है, जो आध्यात्मिक, सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर व्यक्ति और समाज के चरित्र निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं। उनके काव्य में समानता, प्रेम, त्याग, सह-अस्तित्व, और नशा मुक्ति जैसे मूल्य जीवन की दिशा तय करने वाले तत्व के रूप में निरूपित हैं। गुरु रविदास जी के जीवन मूल्य न केवल दलित समाज की चेतना को जाग्रत करते हैं, बल्कि समतामूलक समाज की स्थापना का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं.

Keywords: जीवन मूल्य, गुरु रविदास, सामाजिक चेतना.

प्रस्तावना

पहले जिन दलितों एवं शूद्रों को अनेक जातियों से जाना जाता था, उनकी रविदसिया समाज के नाम से जो पहचान बनी, वह केवल गुरु रविदास जी से । गुरु जी की वाणी से समाज के सभी पक्षों में क्रांतिकारी परिवर्तन आया । युवकों ने अपनी गाड़ियों के आगे लिखवाना शुरू कर दिया –'पुत्त चमारां दे', अणखी कौम, रविदसिया धर्म आदि । अलग गुरु-घर बन गए । गुरु ग्रंथ साहब के स्थान पर अमृतवाणी पढ़ी जाने लगी । गुरु रविदास बनाम रविदसिया समाज एक ही सिक्के के दो पहलु बन गए हैं । उनका रहन–सहन, खान–पान बदल गया । शिक्षा के साथ–साथ जीवन मूल्यों ने उनका आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक स्तर बदल कर उनका चारित्रिक विकास किया । गुरु रविदास जी के काव्य में निरूपित जीवन मूल्यों को अपना कर रविदसिया समाज की जीवन – शैली ही बदल गई ।

जीवन मूल्य का अर्थ

मानव-जीवन ईश्वर प्रदत अमूल्य देन है । मानव जब किसी विशेष वर्ग व वर्ण समूह में मिल जाए तो उस रूप को समाज कहते हैं । समाज की मनुष्य को सबसे बड़ी देन जीवन मूल्य हैं । समाज की मान्यताएँ, धारनाएँ, आदर्श और उच्चतर आकांक्षाएँ जीवन मूल्यों का सृजन करतीं हैं । अत: यह स्पष्ट है कि जीवन मूल्यों के आधार पर ही मानव जीवन की प्रवृतियाँ, धारणाएँ, सिद्धान्त और आदर्श स्पष्ट हो जाते हैं । मानव का जीवन, जीवन मूल्यों के बिना अधूरा है ।

निम्न समाज में पैदा हुए सतिगुरु रविदास जी का चरित्र एवं व्यक्तित्व गौरवमय बनकर स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ,क्योंकि उनके द्वारा अपनाए गए जीवन मूल्यों ने उन्हें इस श्रेणी में लाकर खड़े कर दिया जिससे वे दूसरों के लिए आदर्श बन गए । रविदास जी के काव्य में निहित जीवन मूल्यों ने रविदसिया समाज के जीवन की मशाल को अग्नि देकर प्रज्वलित किया है ।

आध्यात्मिक मूल्य

मानव जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों का एक अनूठा एवं अलौकिक रूप देखने को मिलता है । गुरु रविदास जी अपने पूरे काव्य में आध्यात्मिकता के मूल मंत्र तथा जीवन के श्रेष्ठ लक्ष्य पर पहुँचने का पावन संदेश दिया है।

'त्रिगद जोनि अचेत, संभव पुन्न पाप असोच ।
मनुखा अवतार, दुलभ, तिही संगत पोच ॥'

अर्थात पृथ्वी पर रेंगने वाले जीव-जंतु एवं जानवरों को पुण्य-पाप की समझ नहीं होती। इसलिए उनको दोषी नहीं ठहराया जा सकता पर मानव तो सोच का धनी होता है, अगर वह फिर भी पाप-पुण्य को समझे बिना बुराइयों की संगति करता है, काम, क्रोध, लोभ, मोह, हंकार में फँसकर ईश्वर को भूल जाता है,तो उसका जीवन व्यर्थ चला जाता है । अत: हमें एक ईश्वर का ध्यान करना चाहिए ।

रविदास जी ने आपने काव्य के माध्यम से अच्छी संगति की प्रेरणा दी है –

सत संगति मिलि रहिऐ माधउ
जैसे मधुप मखीरा ॥

अर्थात हमें मधु मक्खियों की तरह मिलकर रहना चाहिए। जिस प्रकार वे मीठे एवं सुगंधित फूलों पर बैठतीं हैं, उसी प्रकार हमें भी अच्छे व्यक्तियों की संगति करनी चाहिए ।

यदि मनुष्य गुरु रविदास द्वारा बनाए व बताए रास्ते पर चलेगा, उनके वक्तव्यों का अनुसरण करेगा तो निश्चय ही उसके समुज्वल चरित्र का निर्माण होगा । महीप सिंह ने अपने व्यक्तित्व पर पड़े महापुरुषों के प्रभाव को अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग मानते हुए माना है कि "इतिहास में गुरु गोबिन्द सिंह और स्वामी विवेकानंद जी मेरे प्रिय व्यक्तित्व हैं । दोनों के जीवनकी ऊर्जा, कर्मठता और चिंतन की व्यापकता ने मुझे बहुत प्रभावित किया है।"[2]

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

***Corresponding Author:** किरण शर्मा

DOI- https://doi.org/10.5281/zenodo.16637429

ऐसे ही धार्मिक ग्रन्थों के विषय पर चर्चा करते हुए नरेंद्र कोहली ने अपने विचार इस रूप में अभिव्यक्त किए हैं – "आध्यात्मिक ग्रन्थों की सबसे बड़ी देन यह है कि ये मनुष्य को निष्काम कर्म के मार्ग पर चलना सिखाते हैं और साथ ही अपने अनुभव के ज्ञान का बोध कराते हैं ।"[3]

मानव को उसके सम्पूर्ण जीवन में जो कुछ मिलता है, वह प्रभु की कृपा से ही मिलता है । रविदास जी ने इसी संदेश को लोगों तक पहुंचाया है –
उपजिउ गियान हूआ परगास ॥
करि किरपा लीने कीट दास ॥
कहि रविदास अब त्रिशना चूकी ॥
जपि मुकंद सेवा ताहु की ॥
अर्थात जीवन में साधक को ज्ञान का प्रकाश प्रभु की बख़्शिश से ही प्राप्त होता है । यह परम वैराग्य की अवस्था है । इस अवस्था में पहुँच कर मानव की सभी तृष्णाओं का नाश हो जाता है और निर्वाण की प्राप्ति हो जाती है ।

राजनैतिक मूल्य

शुरू से ही मानव मूलत: किसी न किसी रूप से एक दूसरे के सहयोग से ही आगे बढ़ता आया है । आपसी परमार्थ की भावना मानव के अन्तर्मन मन में ऐसी भावनाएँ उद्वेलित कर देती है जो उसे सामान्य से विशिष्ट बना देती है । मानुष्य अपनी आत्मरक्षा के लिए प्रारम्भ से ही प्रयास करता आया है । स्वयं की रक्षा के लिए उसने धीरे-धीरे अस्त्रों-शास्त्रों का प्रयोग करना शुरू कर दिया । यही अस्त्र शास्त्र आज मानव और राष्ट्र के नाश का कारण समझे जाने लगे हैं । राष्ट्र की उचित व्यवस्था के लिए महापुरुषों की वाणियाँ राष्ट्र की विनाशकारी स्थिति को निर्माणकारी स्थिति में बदल देती है ।

सामाजिक मूल्य

मानव जब सभ्य समाज के रूप में अपना जीवन यापन करने लगा तब उसके भीतर ऐसी प्रवृतियाँ, भावनाएं उद्वेलित होने लगी जिन्होने मनुष्य को सामूहिक रूप से जीने के लिए प्रेरित किया । मनुष्य के इसी सामूहिक रूप को धीरे-धीरे समाज के रूप में पहचान मिली । इस प्रकार प्रेम, आपसी सहयोग व भाईचारे की भावना ने मनुष्य को एकल इकाई को सकल समूह में परिवर्तित कर समाज की रचना की । वैयक्तिक मूल्यों को जब वैयक्तिक सीमा से परे सामाजिक मूल्य सीमा के रूप में देखा जाता है, तब वही मूल्य सामाजिक मूल्य कहलाते हैं । समाज का वास्तविक लक्ष्य मानव को सभ्य एवं शिक्षित बनाना, जीवन-यापन के कार्यों के योग्य बनाना तथा गुण-दोष में भेद समझाना है । मूल्य विभाजन में सामाजिक मूल्यों को विशेष महत्त्व दिया जाता है ।

गुरु रविदास ने अपने काव्य में सभी प्रकार के सामाजिक मूल्यों की स्थापना की है । आप के समय नारी की भी वही अवस्था थी जो दलितों की थी । पर उन्होने मीराबाई, झालांबाई जैसी राजघराने की महिलाओं को अपना शिष्य बना कर सामाजिक बंधनों से मुक्त करवाया ।
गुरु रविदास ने कहा है –
"मेरी जाति कमीनी पाति कमीनी
ओछा जनम हमारा ॥"
"रे चित चेति चेत अचेत
काहे ना बाल्मीकहि देख ॥
किसु जाति ते किस पदहि अमरिउ राम भगति बिशेस ॥"
अपनी चमार जाति का स्थान-स्थान पर प्रयोग कर उसके महत्त्व को इस प्रकार दर्शाया कि रविदसिया समाज में नई जान भर दी –
"नागर जना मेरी जाति विख्यात चमारं"

गुरु रविदास जी ने नशे जैसी सामाजिक बुराई का खंडन कर समाज को नशा मुक्त करने का जीवन मूल्य प्रदान किया –
"सुरसरि सललक्रित बारूनी रे
संत जन करत नहीं पानं ॥"

अर्थात शराब चाहे गंगा जल की भी क्यों न बनी हो, महापुरुष कभी भी उसका सेवन नहीं करते । गुरु जी ने इस अटल सच्चाई का स्पष्टीकरण किया कि कोई भी अच्छाई यदि बुराई में बदल जाए तो वह अपना सम्मान और महत्त्व खो बैठती है, इसके विपरीत यदि कोई बुराई, अच्छाई बन जाए तो उसका मान-सम्मान पुन: जगमगा उठती है ।

जीवन मूल्यों का महत्त्व

मानव मूल्य एक ऐसी आचरण संहिता है जिसे हम अपने संस्कारों के माध्यम से अपनाकर अपने निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीवन के लिए एक विशेष प्रकार की जीवन पद्धति का निर्माण करते हैं । मानव के जीवन मूल्य एक ओर मानव के अंत:करण द्वारा नियंत्रित होते हैं, तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परंपरा द्वारा क्रमश: नियंत्रित एवं परिपोषित होते हैं । बहुजन हित और सर्वजनहित की भावना जीवन मूल्यों की कसौटी कही जा सकती है । जीवन के उदात मूल्यों समानता, स्वतन्त्रता,स्वच्छता, त्याग, प्रेम, सत्य, समय-पालन, अहिंसा आदि का प्रयोग यदि मानव आत्मरक्षा व आत्म पोषण के साथ-साथ सर्वजन की रक्षा के लिए करता है तो निश्चित ही वह जीवन मूल्यों की कसौटी पर खरा उतरता है ।

यदि हम वास्तव में आज के संत्रप्त जीवन से मुक्ति पाना चाहते हैं तो रविदास जी के काव्य में प्रदत्त जीवन मूल्यों

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher

को निष्ठापूर्वक अपने जीवन का अंग बना लेना चाहिए । तभी हम एक कुशल व उत्तरदायीनागरिक के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हो सकते हैं ।

वर्तमान परिदृश्य में रविदासिया समाज की स्थिति

जितनी प्राचीन भारतीय सभ्यता है, उतनी ही पुरानी है दलित-रविदसिया समाज के दुखों की कहानी। चाहे गुरु रविदास जी ने इन सभी बंधनों को तोड़ कर हमारे लिए आगे बढ़ने का रास्ता प्रशस्त किया है, जिसे श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु ग्रंथ साहब तक सभी महापुरुषों ने इस रास्ते को ओर साफ-सुथरा बनाने के लिए तन-मन से प्रयत्न किया, परंतु सदियों की गुलामी की तहों को उस सीमा तक नहीं धोया जा सका, जहां तक उम्मीद थी ।

डॉ. दवेशवर 'बेगमपुरा' की विचारधारा का अध्ययन करने के पश्चात इस परिणाम पर पहुँचते हैं –"इस शबद की अंतरात्मा में राजसी तौर पर लोकतंत्र, आर्थिक रूप से समाजवादी राज और आत्मिक रूप से एक कलामयी जगत की स्थापना है जिसमें 'सत्यम, शिवम, सुंदरम' का पहरा है । प्रत्येक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए यहाँ पूर्ण अवसर प्राप्त हैं ।"[7]

पाद-टिप्पणी

1. निर्मल वर्मा मेरे साक्षात्कार,नई दिल्ली : किताब घर प्रकाशन, 2010, पृष्ठ 118
2. मजीद अहमद, मेरे साक्षातकार, नई दिल्ली : किताब घर प्रकाशन, 2008, पृष्ठ 44
3. नरेंद्र कोहली, मेरे साक्षात्कार,नई दिल्ली : किताब घर प्रकाशन, 2008, पृष्ठ 27
4. आदिग्रंथ, पन्ना – 345
5. पंजाबी दुनिया, जून-जुलाई, गुरु रविदास विशेष अंक, पन्ना-1977, 12
6. रविदास, गुरु रविदास अकादमी, पंजाब (रजि.), अप्रैल, 1992, पन्ना – 8
7. रविदास , गुरु रविदास साहित्य अकादमी, पंजाब (रजि.) अप्रैल-1992 पन्ना -27

Source of support: Nil; **Conflict of interest:** Nil.

Cite this article as:
किरण शर्मा, " गुरु रविदास जी के काव्य में निरूपित जीवन मूल्य." *Sarcouncil Journal of Humanities and Cultural Studies* 3.3 (2024): pp 23-25.

Copyright © 2022 The Author(s): This work is licensed under a Creative Commons Attribution- NonCommercial-NoDerivatives 4.0 (CC BY-NC-ND 4.0) International License

Publisher: SARC Publisher